मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

सरकारी नौकरियां बेचने की प्रथा काफ़ी पुरानी है	3
फुटपाथ व साइकिल ट्रैक के नाम पर होगी अलग से लूट	4
नागरिक इतने 'अवांछनीय' क्यों हो गये हैं?	5
आपके नाम किसानों का संदेश' शीर्षक से पीएम को लिखा खुला पत्र	6
बलात्कार के मामले में समझौता कराती है फरीदाबाद पुलिस	8

वर्ष 36 | अंक 03 | फरीदाबाद | 28 नवम्बर-4 दिसम्बर 2021 | फोन-8851091460 | ₹3.00

263 करोड़ 88 लाख ओवरहालिंग में खर्च हो गये

करनाल चीनी मिल के खट्टर उद्घाटन के बाद 700 बोरी चीनी गयी पानी में

करनाल (म.मो.) बेशक यहां की सरकारी चीनी मिल 45 साल पुरानी है, परन्तु इसका उद्घाटन तो हर साल सीजन शुरू होने पर किया ही जा सकता है और फ़िर जब करने को कुछ भी न हो तो यही काम करने में हर्ज भी क्या है। बीते चार-पांच माह में करोड़ों रुपये मिल की ओवरहॉलिंग पर खर्च करने के बाद आठ नवम्बर को खट्टर जी के कर कमलों से नये सीजन का मुहूर्त कराया गया। यह मुहूर्त इतना अशुभ रहा कि तीन दिन बाद यानी 11 तारीख को 700 बोरी की पहली खेप बाहर आनी थी वह बनते-बनते सारी पानी में बह गयी। हुआ कुछ यूं कि चीनी दाना बनाने की प्रक्रिया में जब अति गर्म माल पैन में आया तो वह ऐसा लीक हुआ कि सारी चासनी पानी में बह कर एफ्ल्यूंट प्लांट में पहुंच गयी जहां 10 लाख लीटर पानी होता है। यानी सब गया मिट्टी में।

दरअसल मुहूर्त कोई भी शुभ-अशुभ नहीं होता और न ही किसी के कर कमल इसमें कुछ कर पाते हैं। होता केवल यह है कि मेंटेनेंस अथवा मुरम्मत के नाम पर जो करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं, उसमें अफ़सरों व नेताओं की मोटी सेंधमारी होती है। बार-बार आरटीआई लगाने के बावजूद मिल अधिकारी मुरम्मत पर हुए खर्च का कोई हिसाब देने को तैयार नहीं।

11 के बाद तीन दिन की प्रक्रिया पूरी करके 14 तारीख को फ़िर चीनी बनी। लेकिन चीनी का उत्पादन क्षमता का एक

चौथाईभी नहीं हुआ। जिस क्रिस्टलाइज़र मशीन में दाना बनता है उसी में से काफ़ी चीनी उछल-उछल कर बाहर गिर कर बर्बाद हुई जा रही है। जानकार बता रहे हैं कि अभी तक अधिकारियों ने मिल को ओवरहालिंग के बाद ठेकेदार से अधिग्रहीत ही नहीं किया है, न जाने कब तक ट्रायल के नाम पर कितनी चीनी व कितना धन यूं ही बर्बाद किया जाता रहेगा। इस प्रकार 11 तारीख से लेकर खबर लिखे जाने तक प्रतिदिन 30-40 लाख रुपये का नुक्सान इस मिल को हो रहा है जिसका कोई जवाब किसी के पास नहीं।

नियमानुसार बल्कि ठेके की शर्तों के अनुसार मेंटेनेंस के दौरान खर्च होने वाली बिजली का बिल ठेकेदार के जिम्मे होता है। इस बाबत जब आरटीआई लगा कर पूछा गया तो 2 जुलाई 2021 को बताया गया कि ठेकेदार ने अपने डीजल सेट की बिजली का इस्तेमाल किया है लेकिन चीफ़ एकाउंट्स अफ़सर अपने लिखित जवाब में कहते हैं कि इस मद में ठेकेदार को डेबिट नोट जारी कर दिया गया है। बीते पांच साल में कितनी रकम का डेबिट नोट जारी हुआ है, इस बाबत अधिकारी खामोश हैं। चीनी उत्पादन के दौरान रस से उठने वाली भाप से बिजली बनाने की व्यवस्था भी है। मिल में लगे टर्बाइन से 18 मेगावट बिजली बनाई जाती है जबकि मिल की कुल खपत इससे काफ़ी कम है। फ़ालतू बिजली खरीदने के लिये बिजली विभाग से एक समझौता भी हुआ पड़ा है लेकिन इसके लिये आवश्यक सब स्टेशन जो मिल ने बनवाना है वह कई वर्षों से नहीं बन पाया। इसके चलते फ़ाल्तू बिजली बर्बाद हो रही है। यानी जिस बिजली को बेचने से मिल को कुछ आय हो सकती थी, वह बर्बाद हो रही है।

इन तमाम बर्बादियों के बावजूद किसी मंत्री या किसी अधिकारी की सेहत पर कतई कोई असर नहीं क्योंकि यह घाटा इनमें से किसी के घर से नहीं जा रहा, जा रहा है तो केवल ग़रीब करदाता की जेब से। इस तरह का लूट खेल कोई अकेली करनाल मिल में नहीं हो रहा, लगभग सभी चीनी मिलों का यही हाल है। चीनी मिल ही क्या सरकार द्वारा चलाये जा रहे प्रत्येक उपक्रम का यही हाल है। ऊपर से तमगा है भ्रष्टाचार मुक्त हरियाणा का।

गौरतलब है कि इतनी बड़ी रकम इस मिल की कार्यक्षमता डबल करने के लिए खर्च की गयी थी। इस खर्च के बाद अपेक्षा की गई थी कि पिढ़ाई क्षमता 35 हजार क्विंटल प्रतिदिन हो जायेगी। लेकिन यह क्षमता 20 हजार क्विंटल से आगे नहीं जा पा रही। और तो और इस पिढ़ाई से भी जो माल बन रहा है वह भी बर्बाद हो रहा है। यानी की इतनी भारी रकम खर्च करने के बाद भी रोजाना मिल को भारी घाटा उठाना पड़ रहा है। निकट भविष्य में इसके सुधरने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे।

दंगा भड़काने को प्रयासरत संघी हुड़दंगी

फ़रीदाबाद (म.मो.) देश भर में फैले किसान आन्दोलन द्वारा संघियों/भाजपाईयों का हिंदू बनाम मुस्लिम प्लेटफ़ार्म ध्वस्त कर दिये जाने के बावजूद कुछ संघी हुड़दंगी हिन्दू-मुस्लिम विवाद खड़े करके दंगे भड़काने का पुरजोर प्रयास कर रहे हैं।

इन हुड़दंगियों में आजकल जीत वशिष्ठ (फेसबुक पर घोषित नाम) अति सक्रिय भूमिका निभा रहा है। दिनांक 23 नवम्बर को तो इसने उस वक्त हद ही कर दी जब यह पंचायत भवन, जहां बल्लबगढ़ के डीसीपी, एसीपी, एसडीएम व तहसीलदार आदि तमाम अधिकारी बैठते हैं, परिसर में वर्षों पुरानी मज़ार को ढाने पहुंच गया। वहां के मौलवी पर तरह-तरह की दवाइयां, ऐसा-वैसा साहित्य बांटने व पाकिस्तान समर्थक होने का मनगढंत आरोप लगाते हुए, मजार को वहां से हटाने का फ़रमान जारी कर दिया। इतना ही नहीं उसी रात को वह मजार तोड़ भी दी गई और तथाकथित दवाइयां व ऐसा-वैसा साहित्य जला भी दिया। इसके साथ-साथ मौलवी पर लवजिहाद चलाने का आरोप भी मढ़ दिया।

इससे पहले भी नवरात्रों के दिनों में इसी जीत वशिष्ठ ने सोहना रोड पर, संजय कॉलोनी पुलिस चौकी के निकट कुछ मीट विक्रेताओं को ज़िला उपायुक्त के आदेशों का हवाला देकर उन्हें धमकाया व दुकानें बंद करा दी, जबकि ऐसा कोई आदेश नहीं था और यदि कोई आदेश हो भी तो वह कौन होता है उसको लागू करवाने वाला?

इसी तरह 19 तारीख को थाना मुजेसर के इलाके में ईस्ट इंडिया कंपनी चौक पर रेहड़ी लगाकार शाकाहारी बिरयानी बेचने वाले के विरुद्ध एक फ़र्जी वीडियो बना कर आरोप लगाया कि वह बर्तन धोने वाले पानी में पेशाब कर रहा है। इस बाबत जीत द्वारा शिकायत किये जाने पर मुजेसर पुलिस ने इसे झूठा पाया।

संतोष की बात यह है कि तमाम भड़काऊ कार्रवाईयां करने के बावजूद मुस्लिम भाई भड़कने को तैयार नहीं हैं। लगता है कि उन्हें संघियों की राजनीतिक रणनीति समझ आ चुकी है। वे कोई ऐसा कदम उठाने वाले नहीं दिखते जिससे हुड़दंगियों को कोई मौका मिल सके। उधर एक उच्च पुलिस अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि जीत वशिष्ठ पर उनकी पूरी निगाह है। वह यह सब सस्ती लोकप्रियता पाने के लिये फेसबुक पर ड्रामे खेल रहा है। अवसर मिलते ही उसे धार पर धर देंगे। उन्होंने यह भी बताया कि मोलवी ने वहां से मजार स्वयं हटा दी है।